



॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—<http://www.facebook.com/groups/aryayouth/>

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

युवा उद्घोष पत्रिका

के नियमित सफल प्रकाशन के
40 वर्ष पूर्ण होने पर

आप सबको

हार्दिक बधाई!

—अनिल आर्य, सम्पादक

वर्ष-40 अंक-01 ज्येष्ठ-2080 दयानन्दाब्द 200 01 जून से 15 जून 2023 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.06.2023, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoo.com Website : www.aryayuvakparishad.com



॥ ओ३म् ॥

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के ४५वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में

डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कु. चौहान के सानिध्य में
विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर

भव्य उद्घाटन समारोह

शनिवार, ३ जून २०२३, सायं ५ बजे से ७.३० बजे तक

स्थान : ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-44, नोएडा

(निकट मेट्रो स्टेशन बोटोनिकल गार्डन)

कार्यक्रम

मुख्य अतिथि : श्री पंकज सिंह जी (विधायक नोएडा)

यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य गायत्री मीना (मंत्री, आर्य समाज सैक्टर-३३, नोएडा)

ध्वजारोहण : ठाकुर विक्रम सिंह जी (संस्थापक अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी)

अध्यक्षता : श्री आनन्द चौहान जी (निदेशक, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

मुख्य वक्ता : डॉ. जयेन्द्र आचार्य जी (आर्य समाज सैक्टर-३३, नोएडा)

मधुर भजन : पं. रमेशचन्द्र स्नेही (हरिद्वार), श्रीमती पिकी आर्या

विशिष्ट अतिथि :

श्री माया प्रकाश त्यागी (कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

डॉ. डी.के. गर्ग (चेयरमैन ईशान इन्स्टीट्यूट), मे.जन.आर.के.एस. भाटिया

—: गरिमामयी उपस्थिति :-

सर्व श्री त्रि. मुक्तिदास महापात्रा, रामलुभाया महाजन, डॉ. आर.के. आर्य, विनोद गुप्ता, वीरेश भाटी, विजेन्द्र सिंह आर्य, चौ. धर्मवीर आर्य प्रधान, राकेश आर्य (सम्पादक उगता भारत), राजू कोहली, धर्म पाल कुकरेजा कृष्ण कुमार चादव, प्रमोद चौधरी, सुरेश आर्य, नीता-अशोक जेठी, कान्ता कम्बोज, ओमप्रकाश शास्त्री, ओम सपरा, संजीव महाजन, अरुण आर्य, राजेश मेहन्दीस्ता, सुरेन्द्र शास्त्री, रामकुमारसिंह आर्य, सोनिया संज, अजय पथिक, कुसुम भंडारी, लक्ष्मीचंद गुप्ता, हरबंस लाल शर्मा, अमीर चन्द सखेजा, वीरेन्द्र महाजन, पूजा सलूजा, नितिन अरोड़ा, ममता चौहान, कै. अशोक गुलाटी, प्रमोद सिंघल, कौशल्या आर्या

ऋषि लंगर:- रात्रि ७.३० बजे, प्रबन्धक : अरुण आर्य, विवेक अग्निहोत्री, गौरव झा

दर्शनमिलापी

अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष ९८१०११७४६४	यशोवीर आर्य वरि. उपाध्यक्ष ९३१२२२३४७२	देवेन्द्र भगत राष्ट्रीय मंत्री ९९५८८९९७०	धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ९८७९५८१३९८
--	---	--	--

विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर

दीक्षांत व समापन समारोह

रविवार, ११ जून २०२३, प्रातः ११ बजे से १.३० बजे तक

स्थान : ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-44, नोएडा

(निकट मेट्रो स्टेशन बोटोनिकल गार्डन)

मुख्य अतिथि :

डॉ. महेश शर्मा जी
(संसद सदस्य)

डॉ. सत्यपाल सिंह जी
(संसद सदस्य)

आशीर्वाद : डॉ. अशोक कु. चौहान (संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

अध्यक्षता : डॉ. अमिता चौहान (चेयरपर्सन, ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूलस)

—: विशिष्ट अतिथि :-

सर्व श्री अजय चौहान, कै. रोहित कपूर, विजय आर्य (प्रधान, वैदिक साधन आश्रम, देहरादून), योगराज अरोड़ा, रविदेव गुप्ता, प्रि. अंजू मेहरोत्रा, सत्यानंद आर्य, ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, देवेन्द्र आर्य 'आर्य बन्धु', नरेश खन्ना, रमेश छावड़ा, आनन्द प्रकाश आर्य (हापुड), अनूपन बक्शी नोएडा, अशोक आर्य पिलखुआ, संजय सपरा, श्याम पुन्गानी, मधु भसीन, जितेन्द्र डार, कपिल कुमार राय, देवेन्द्र गुप्ता, डॉ. गजराज सिंह आर्य, पुनीता अग्निहोत्री, मन्जुला कुकरेजा, यशपाल आर्य, प्रवीन तायल Brij & Company, निखिल गुप्ता, रवि चड्ढा, धर्मपाल परमार, नरेन्द्र कस्तूरिया, डालेश त्यागी, अनुराध बत्रा, रमेश गाडी, रविन्द्र आर्य, अमरसिंह सहस्रवत, पियूष शर्मा, विजय कपूर, मधु सिंह, रजनी गर्ग, आ. गवेन्द्र शास्त्री, प्रेम कुमार सचदेवा, मानदेव शास्त्री, विद्यामूर्धन आर्य, कमल आर्य, के.एल. पुरी, स्वदेश शर्मा, विनोद कालड़ा, अरुण बंसल, देवदत्त आर्य, अनिल मित्रा, प्रो. करुणा चांदना, डॉ. रचना चांदना, एच.आर. साहनी, प्रकाशवीर शास्त्री, कस्तूरिलाल मकड़, राजकुमारी शर्मा, चन्तर सिंह नागर, आर.पी. सूरी, डॉ. विपिन खेडा, सुशीला गम्भीर, सी.ए. हंसराज चुध, सीमा भाटिया, विकास गोगिया, नरेन्द्र सुमन, विरेन्द्र आहुजा दुर्गेश आर्य, सुरेश आर्य, संगीता गौतम, अरुण अग्रवाल, रजनी-राजेश चुध

—: विशेष आकर्षण :-

आर्य युवकों द्वारा परेड, योगासन, दण्ड-बैठक, लाठी, जूडो-कराटे, बॉक्सिंग, स्तूप आदि
भव्य व्यायाम प्रदर्शन के कार्यक्रम होंगे

ऋषि लंगर:- दोपहर १.३० बजे, प्रबन्धक : त्रिलोक सिंह, यज्ञवीर चौहान, विकास, वीरेन्द्र, नसीब सिंह

—: दर्शनमिलापी :-

प्रवीन आर्य मीडिया प्रभारी ९९११४०४४२३	वेद प्रकाश आर्य राष्ट्रीय मंत्री ९८१०४८७५५९	योगेन्द्र शास्त्री प्रधान शिक्षक ९४१६१३८०४५	सौरभ गुप्ता प्रधान शिक्षक ९९७१४६७९७८
---	---	---	--

Live Telecast on Youtube channel "aryayuvakparishad"

नोट: रविवार 04 जून से शनिवार 10 जून तक प्रातः 11 बजे से 12.30 बजे तक दैनिक बौद्धिक का कार्यक्रम हमारे यूट्यूब चैनल पर देखें।

महर्षि दयानन्द के समाज पर अनेकों उपकार- विधायक पंकज सिंह

नोएडा, रविवार 28 मई 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के नेतृत्व में नोएडा के विधायक पंकज सिंह से भेंट की और एमिटी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 44 नोएडा में लगने वाले आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर का निमंत्रण दिया। उनके साथ पिकी आर्या, गायत्री मीना, आस्था आर्या भी उपस्थित थे। शिविर उद्घाटन पर शनिवार 3 जून को शाम 5.00 बजे पंकज सिंह मुख्य अतिथि रहेंगे। विधायक पंकज सिंह ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के समाज पर अनेकों उपकार हैं उनके सन्देश को युवा पीढ़ी को पहुँचाना सराहनीय कार्य है। उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा से युवाओं को जोड़ने व उनके



भाग लेंगे जिन्हें योग आसन, दण्ड बैठक, लाठी, जूडो कराटे, स्तूप, आत्म रक्षा शिक्षण, संध्या यज्ञ एवं भारतीय संस्कृति की जानकारी दी जाएगी।

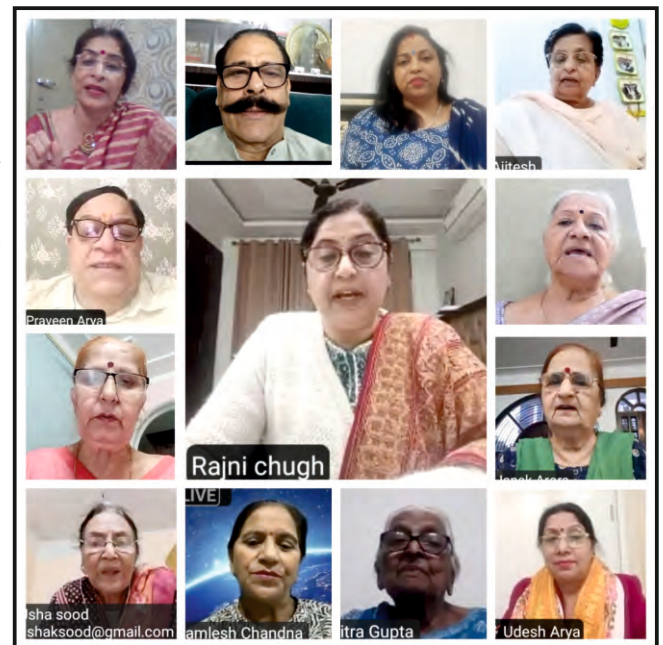
सर्वांगीण विकास के लिए ष्विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर 3 जून से 11 जून 2023 तक आयोजित किया जा रहा है जिसका भव्य समापन समारोह रविवार 11 जून को प्रातः 11 बजे एमिटी ऑडिटोरियम सेक्टर 44 नोएडा में होगा जिसमें सांसद डॉ. महेश शर्मा मुख्य अतिथि होंगे साथ ही संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार चौहान व चेयर पर्सन डॉ. अमिता चौहान आशीर्वाद प्रदान करेंगे। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने बताया कि शिविर में 200 युवक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 540वां वेबिनार सम्पन्न

‘उपवास क्यों और कैसे?’ पर गोष्ठी सम्पन्न

उपवास शारीरिक, आत्मिक, आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम है—आचार्य श्रुति सेतिया

सोमवार 15 मई 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में ‘उपवास क्यों और कैसे?’ विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 535 वाँ वेबिनार था। मुख्य वक्ता आचार्य श्रुति सेतिया ने कहा कि उपवास मन, शरीर की शुद्धि का माध्यम है। उन्होंने कहा कि उपवास का अभिप्राय शरीर के पाचन संस्थान को पूर्ण विश्राम देना है। वस्तुतः उपवास काल में ही उसे विश्राम मिलता भी है, क्योंकि साधारणतया हम प्रतिदिन अपना पेट दो तीन बार भरा करते हैं जिससे हमारा पाचन संस्थान हमेशा काम किया ही करता है, तो उपवास प्राकृतिक स्थिति है, प्रकृति की माँग है। पशु-पक्षी आदि सभी जीव धारियों को उपवास की आवश्यकता पड़ती है जो स्वाभाविक है। रोगी-पशु रोगी- मनुष्य से अधिक समझदार होता है जो रोग व्यवस्था में अच्छे से अच्छे चारे की तरफ उसे खाना तो दूर देखता तक नहीं है वह समझता है रोग अवस्था में कुछ खाना विष और कुछ न खाकर उपवास करना अमृत तथा रोग की औषधि है। हम जब बीमार पड़ते हैं तो हमारी भी भूख स्वभावतः बंद हो जाती है, पर हम प्रकृति के आदेश को नहीं मानते और रोगी होने पर कुछ न कुछ खाते ही रहते हैं जिससे दुख पाते हैं। उपवास काल में शरीर की सारी की सारी जीवनी शक्ति केवल रोगों को दूर करने में लग जाती है और उसे दूर करके ही दम लेती है। बहुत से लोग उपवास को भूखों मरना समझकर बड़ी भूल करते हैं। हमें जानना चाहिए कि उपवास काल में यही विष सर्वप्रथम नाश को प्राप्त होता है, तदोपरान्त उन संचित पदार्थों से शरीर अपना काम लेने लगता है जो उसकी प्रकृति ने विशेष आवश्यकता पड़ने पर काम में आने के लिए पहले से शरीर में जमा करके रखा होता है। उपवास शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वच्छता के लिए



अपूर्व एवम् एक ही उपाय है, सही, किंतु उसका पूरा पूरा लाभ वही उठा सकता है जो उपवास कला का पूर्ण मर्मज्ञ हो। उपवास विज्ञान का वास्तविक ज्ञान न होने पर उपवास के नियमों में व्यतिक्रम होने के कारण अथवा उसका ठीक पालन न हो सकने के कारण कितने ही उपवासियों को जान से भी हाथ धोना पड़ा है। प्रातःकालीन उपवास से लेकर दीर्घ उपवास तक 13 तरह के उपवास किए जाते हैं। उपवास कितने दिनों का करना चाहिए, यह उपवास करने वाले की प्रकृति, आवश्यकता तथा उपवास के प्रकार पर निर्भर करता है। अतः इसके लिए कोई विशेष नियम नहीं बनाया जा सकता। साधारणतया कोई भी 5 सात दिनों का पूर्ण उपवास कर सकता है। उत्तम स्वास्थ्य के चाहने वालों को सप्ताह में एक दिन रविवार को, प्रतिमाह की दो एकादशियों को तथा प्रति वर्ष आठ दस या पंद्रह दिनों का पूर्ण उपवास नियमित रूप से करते रहना चाहिए। ऐसा करने से बहुत लाभ होता है। यदि कहा जाए कि रोगों से मुक्ति पाने के लिए उपवास करने की प्रथा उतनी ही पुरानी है जितने की स्वयं मानव जाति तो गलत न होगा। बाइबल, कुरान और हिन्दुओं के आदि धर्म ग्रंथों में इसके अनगिनत प्रमाण मिलते हैं। उपवास काल में शरीर में जो भोजन लिया जाता है वह नए लिए गए भोजन के अभाव में पहले के बचे हुए या अनपचे भोजन तथा शरीर के विष या मल को धीरे धीरे भस्म कर डालता है। यही वजह है जो उपवास से रोग में अपने आप आराम हो जाता है। ज्वर, पेचिश, दस्त, सर्दी, खाँसी, फोड़े, चेचक आदि तीव्र रोग कहलाते हैं जो अपनी चिकित्सा स्वयं करते हैं। इस प्रकार के रोगों में आरंभ से ही उपवास करना लाभ करता है। हमारा शरीर पंच तत्वों से मिलकर बना है जिसमें आकाश तत्व सबसे अधिक मूल्यवान है शरीर को आकाश तत्व जनशक्ति उपवास द्वारा प्राप्त होती है। इस दृष्टिकोण से भी रोगों के निवारण के लिए उपवास सबसे अधिक महत्व रखता है। मुख्य अतिथि अनिता रेलन व योगाचार्य रजनी चुघ ने उपवास के महत्व पर प्रकाश डाला। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका सरला बजाज, सुनीता आहूजा, कमला हंस, नरेश प्रसाद आर्य, संतोष सांची, शोभा बत्रा, कृष्णा गांधी आदि के मधुर भजन हुए।

‘गर्मियों में स्वास्थ्य रक्षा’ पर गोष्ठी सम्पन्न

आहार विहार का ध्यान रखना आवश्यक—ओम सपरा

शुक्रवार, 26 मई 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में ‘गर्मियों में स्वास्थ्य रक्षा’ विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 538 वाँ वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता ओम सपरा ने कहा कि व्यक्ति जितना भी अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखे, फिर भी कोई न कोई लापरवाही या अनजाने में गलती हो ही जाती है और तब शरीर को उसका दंड भुगतना पड़ता है। आपने कहा कि आयुर्वेद का मुख्य सिद्धांत वात पित्त और कफ त्रिदोषों का सम अर्थात् बराबर होना है। अतः हमारा कर्तव्य है की इन तीन चीजों को संतुलित रखने के लिए भोजन में पथ्य और अपथ्य की पूरी सावधानी रखें। गीता का एक श्लोक है, युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टाश्च कर्मसु। युक्ता स्वप्नो बोध्यास्य योग भवति दुःखहा इसका अर्थ है कि जिस व्यक्ति का आहार विहार ठीक नहीं, जिस व्यक्ति की सांसारिक कार्यों के करने की निश्चित दिनचर्या नहीं है और जिस व्यक्ति की सोने जागने की निश्चित दिनचर्या नहीं है, यदि वह योग करने का दंभ रखता है तो उसे योग का कोई लाभ नहीं मिल सकता। वह योग करके भी दुखी रहता है। अतः हमें इसके अर्थ और भाव के अनुसार अपने जीवन को ढालना चाहिए। आपने कहा कि गर्मी के मौसम में इन तीन नियमों सहित कुल दस बातों का ध्यान रखना जरूरी है। चौथी बात है कि दिन के तेज धूप के समय बाहर कम से कम निकलें। शेष छह बातें इस प्रकार हैं, सर्वप्रथम अपने भोजन की दिनचर्या में एकदम परिवर्तन लाएं। समय पर भोजन और शीतल घड़े का जल ग्रहण करें। फ्रिज का जल और भोजन ग्रहण न करें। गर्मी में रॉक साल्ट, खनिज नमक, जीरा, सौंफ, इलायची जैसे मसाले तथा दही, कच्ची केरी का पन्ना, आम पन्ना, पुदीना, बेल का फल, टंडाई, चटनी, चने या जौ का सत्तू, जल जीरा आदि लेना अधिक लाभप्रद होता है। गर्मी में बदन पर स्क्रेक्स या रेशोज पड़ जाती हैं अतरु खुली रिकन को ढक कर धूप में निकलें और चेहरे या खुले बाजू पर सन स्क्रीन लोशन शरीर की रक्षा हेतु लगा लें। अच्छी ऐनक लगा कर आंख की रक्षा करें। पानी की बॉटल साथ रखें। सूती कपड़े पहनें। भोजन में तला गला हुआ या गरिष्ठ खाना आपको नुकसान पहुंचा सकता है, अतः इससे बचें और दिन की शुरुआत में एक दो गिलास पानी नींबू सहित पिएं। हल्के फुल्के खाद्य पदार्थ, रसीले फल, संतरा, नींबू, स्तर बेरी, नारियल, सेव फल, आम, बेल या गुलाब का शरबत, तरबूज, ककड़ी, खीरा, बालम ककड़ी, अंगूर आदि अधिक ग्रहण करें। एक आवश्यक बात है कि ऐसी का कम से कम प्रयोग करें और ऐसी के कमरे से एकदम बाहर न निकलें। अंतिम बात यह है कि आप नियमित प्रातः काल में शीतली प्राणायाम भी जरूर करें। इन बातों और सावधानियों से आप गर्मी में पूर्ण सुरक्षित रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व प्रिंसिपल, आर्य नेत्री विमला आहूजा ने की उन्होंने भी स्वास्थ्य रक्षा के लिए गर्मी में लू से बचने, हल्के कपड़े पहनने और भारी खाद्य पदार्थ खाने से बचने का सुझाव दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। गायिका प्रविणा ठक्कर, कमलेश चांदना, जनक अरोड़ा, ईश्वर देवी, कमला हंस, कौशल्या अरोड़ा, रविंद्र गुप्ता आदि के मधुर भजन हुए।



‘उपनिषदों में तत्वज्ञान’ पर ऑनलाइन गोष्ठी सम्पन्न

उपनिषदों में जीवन निर्माण के तत्व छिपे हैं— डॉ. रामचन्द्र (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय)

शुक्रवार 19 मई 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में ‘उपनिषदों में तत्वज्ञान’ विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार सम्पन्न हुआ। यह कोरोना काल से 536 वाँ वेबिनार था। मुख्य वक्ता डॉ. रामचन्द्र (संस्कृत विभागाध्यक्ष, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) ने कहा कि उपनिषदों में जीवन निर्माण के वे मूल तत्व छिपे हुए हैं जिनके आधार पर अनादि काल से शिष्ट एवं मेधावी मानव का निर्माण होता रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा में मुख्य रूप से ब्रह्म विद्या के लिए उपनिषद शब्द का प्रयोग होता है। वर्तमान समय में 11 प्रमुख उपनिषद् प्राप्त होती हैं इनमें अभ्युदय एवं निश्च्रेयस तथा श्रेय एवं प्रेय मार्ग की बहुत ही संतुलित व्याख्या प्राप्त होती है। इनके अध्ययन से व्यक्ति के क्लेश एवं तनाव पूरी तरह समाप्त हो जाते हैं तथा उत्साह एवं उमंग के संस्कार जीवन के अभिन्न अंग बन जाते हैं। वस्तुतः उपनिषद हमें बताते हैं कि संसार को केवल बाहर से नहीं देखना है अपितु इसके कण – कण में व्याप्त ईश्वर की उपस्थिति के साथ देखना है। यह दृष्टि व्यक्ति को संसार का स्वामी बनाती है। ईशोपनिषद् में कहा है कि परम सत्य का मुख स्वर्णमय पात्र से ढका हुआ है उसे हटाकर ही परम सत्य को देखा जा सकता है। आज का युवा संसार की प्रत्यक्ष चकाचौंध में ही उलझ जाता है उससे प्राप्त असफलता के कारण युवा पीढ़ी लगातार क्लेश, तनाव एवं निराशा ग्रस्त हो रही है। उपनिषदों का सन्देश लौकिक सत्य एवं ब्रह्म सत्य के संतुलन का है जिसके माध्यम से व्यक्ति पहाड़ जैसे कष्ट को भी हंसते हुए पार कर लेता है। कठोपनिषद एवं बृहदारण्यक उपनिषद् में नचिकेता एवं मैत्रेयी का कालजयी संवाद प्रत्येक व्यक्ति को अवश्यमेव पढ़ना चाहिए। वहाँ कहा गया है कि केवल सांसारिक पदार्थों की प्राप्ति से सुख प्राप्ति की इच्छा का मार्ग अन्धकार पूर्ण है। केवल मनुष्य में ही नहीं अपितु प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ से एकात्मकता की अनुभूति होने पर अपना – पराया का भाव समाप्त होता होता है और व्यक्ति के शोक और मोह समाप्त हो जाते हैं। तैत्तिरीय उपनिषद में वर्णित अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय एवं आनन्दमय कोश का सम्यक अनुशीलन व्यक्ति को शारीरिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक रूप से मजबूत बनाता है। इस उपनिषद् में अधिक से अधिक अन्न पैदा करने एवं कभी भी अन्न की निंदा न करने का भी सन्देश दिया गया है। यह उल्लेखनीय है कि नई शिक्षा नीति में उपनिषदों के मूल्यवान संदेश को प्रमुखता से शामिल किया गया है। ऐतिहासिक रूप से आदि शंकराचार्य का भाष्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। स्वामी दयानन्द एवं स्वामी विवेकानन्द ने उपनिषदों के अध्ययन का आह्वान किया है। मंच का कुशल संचालन परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने किया व राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। मुख्य अतिथि डॉ. संतोष अरोड़ा (कानपुर) एवं आर्य नेता राजेश मेंहदीरता ने भी उक्त विषय पर अपने विचार रखे।



दानदाताओं से अपील: केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली-110007, आई. एफ. एस. कोड - SBIN001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868051444 पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित।

— डा. अनिल आर्य

‘स्वतंत्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द का योगदान’ पर गोष्ठी सम्पन्न

देश को स्वतंत्र करवाने का स्वप्न महर्षि दयानन्द ने लिया था – आर्य रविदेव गुप्ता
नये संसद भवन में महर्षि दयानन्द का चित्र स्थापित हो –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सोमवार 29 मई 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में ‘स्वतंत्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द का योगदान’ विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 537 वाँ वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता आर्य रविदेव गुप्ता ने कहा कि देश को स्वतंत्र करवाने का स्वप्न महर्षि दयानन्द ने देखा था। उन्होंने 1882 में ही अपने ग्रंथ षस्यार्थ प्रकाश में लिख दिया था कि कोई कितना ही करे परंतु स्वदेशी राज्य सर्वोत्तम होता है। सरदार पटेल, श्याम जी कृष्ण वर्मा, मदन मोहन मालवीय, डॉ. राधाकृष्णन, दादा भाई नौरोजी आदि ने भी इस बात की पुष्टि की है। महर्षि दयानन्द रूपी मशाल से प्रेरणा लेकर हजारों नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। कांग्रेस के इतिहासकार सीतारामय्या ने भी महर्षि दयानन्द को राष्ट्र पितामह से संबोधित किया था। आज स्वामी दयानन्द सरस्वती की 200 वीं जयंती पर उनके संदेश को घर घर पहुंचाने की आवश्यकता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने तार्किक शक्ति का विकास किया और लोगों के सोचने की दिशा ही बदल डाली। उन्होंने नये संसद भवन के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि नए संसद भवन में समग्र क्रान्ति के अग्रदूत स्वामी दयानन्द का चित्र स्थापित किया जाये। मुख्य अतिथि शिक्षाविद जगदीश पाहुजा व अध्यक्ष पूजा सलूजा ने भी उनके समाज निर्माण में योगदान की चर्चा की। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।



‘विभूति योग 75 दिव्य वर्णन गीता में’ पर गोष्ठी सम्पन्न

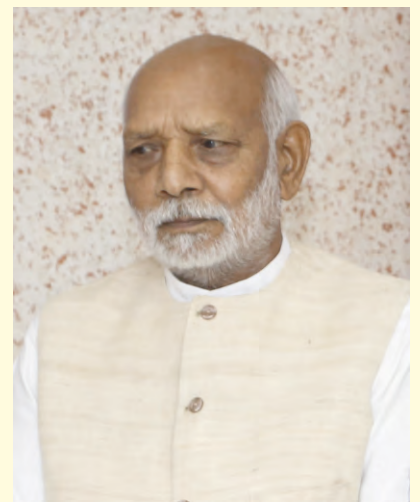
जीवन में बुद्धि, ऐश्वर्य, आनन्द चाहते हैं तो जप करो –आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा (गवालियर)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में ‘विभूति योग 75 दिव्य वर्णन गीता में’ विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 539 वाँ वेबिनार था। वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्र शेखर शर्मा (गवालियर) ने कहा कि भगवत गीता के 10 वें अध्याय में विभूति योग का बहुत ही सुन्दर वर्णन है। प्रत्येक महान वस्तु में परमात्मा विद्यमान है यही उसकी विभूति है परमात्मा का मुख्य और निज नाम ओम है। पंच यज्ञ में जप यज्ञ सबसे बड़ा है, इसे अनुभव करना चाहिए। स्वामी दयानन्द ने सबसे ज्यादा गायत्री मंत्र का जप किया था, अतः प्रातः सायं जप करें, आप जीवन में आनन्द, बुद्धि, ऐश्वर्य चाहते हैं तो जप को दिनचर्या में शामिल करें। मुख्य अतिथि कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि संध्या उपासना से ईश्वर के निकट पहुंच सकते हैं। अध्यक्षता आर्य नेत्री रजनी चुघ ने की उन्होंने कहा यह वेबिनार ज्ञानवर्धन करने वाला एवं प्रेरणादायी रहा। गहन विषय को सरलतम शब्दों में प्रस्तुत किया गया। उन्होंने आगे कहा गीतामृत पीकर मानव ज्ञानी बन जाता है। राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। गायिका प्रविणा ठक्कर, कमलेश चांदना, जनक अरोड़ा, ईश्वर देवी, कमला हंस, कौशल्या अरोड़ा, सुनीता उपाध्याय, कुसुम भण्डारी, सुषमा गुगलानी, रविंद्र गुप्ता आदि के मधुर भजन हुए। इस अवसर पर मुख्य रूप से सर्वश्री सुभाष शर्मा, यज्ञ वीर चौहान, त्रिलोक शास्त्री, भूपेन्द्र शर्मा, धर्मदेव खुराना, सुशीला यादव, राजश्री यादव, वीना छाबड़ा, सुमित्रा गुप्ता, मिथलेश गौड़, नीलम खनूजा, वेद प्रभा, चन्द्र कांता आदि उपस्थित रहे।



आर्य रत्न ठा. विक्रम सिंह का एक भव्य समारोह में अभिनन्दन करने की योजना

सभी आर्य बंधुओं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य रत्न ठा. विक्रम सिंह इस वर्ष 19 सितंबर 2023 को अपने जीवन के 80 वसंत पूर्ण करने जा रहे हैं। महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रति उनकी अगाध निष्ठा, वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए किए गए उनके अतुल पुरुषार्थ तथा वैदिक विद्वानों, संन्यासियों, आचार्यों व आर्य संस्थाओं के संरक्षण व संवर्धन के लिए उनके द्वारा किए जा रहे महनीय प्रयासों को देखते हुए आर्य नेताओं व विद्वज्जनों की दिल्ली में हुई बैठक (जनवरी 11, 2023) में निर्णय लिया गया कि 80 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनका एक भव्य समारोह में अभिनन्दन किया जाए। उनके लिए भेंट किए जाने वाले अभिनन्दन ग्रंथ की तैयारी के लिए आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा. ज्वलंत कुमार शास्त्री की अध्यक्षता में एक संपादक मंडल भी गठित किया गया है। आर्य समाज के सभी नेताओं, मनीषियों, विद्वानों, आचार्यों, आचार्याओं, उपदेशकों आदि से अनुरोध है कि ठा. विक्रम सिंह जी के संबंध में यदि आपके पास कोई संस्मरण हो, किसी कार्यक्रम के फोटोग्राफ हों अथवा उनके व्यक्तित्व-कृतित्व से संबंधित जानकारियां हो, व्यक्तिगत अनुभव हों तो तुरंत टाइप करवाकर या हस्तलिखित रूप में उसे हमारे साथ साझा स्पीड पोस्ट अथवा ई-मेल द्वारा उपरोक्त पते पर करने हेतु अनुरोध है।



इसी प्रकार वैदिक सिद्धांतों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता, महर्षि दयानन्द व आर्य समाज का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान, शिक्षा व राजनीति के विषय में महर्षि दयानन्द का चिंतन, महर्षि दयानन्द का राष्ट्रवाद आदि विषयों पर विद्वज्जनों से अपने लेख भेजने हेतु निवेदन है। आर्य कवियों से भी अनुरोध है किया जाता है कि आप भी ठाकुर विक्रम सिंह जी के जीवन से संबंधित अपनी काव्य रचना शीघ्र ही भेजने का कष्ट करें। इस अवसर पर किए जाने वाले समारोह के संबंध में आपके पास यदि कोई सुझाव हों तो अवश्य अवगत कराएं। इस अद्भुत आयोजन में आपके पूर्ण सहयोग की कामना है। तन-मन-धन से इस आयोजन में सहभागी बन आर्य समाज के नवनिर्माण के प्रयासों के साक्षी बनें। धन्यवाद।।

–डा. आनंद कुमार आई.पी.एस., संयोजक: ठाकुर विक्रम सिंह अभिनन्दन ग्रंथ समिति, मो. 9810764795

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम